ISSN 2231-6191

जन विकल्प

14-15

समकालीन लंबी कविताओं से एक यात्रा

युद्ध और शांति
सृष्टि चक्र
पटवा बाघ के बसंत
जंगल कथा
आद्य नायिका
भूखंड तप रहा है
अभी तो
शोक सभा
खंडहर
अमर कोली
सुराजे हिन्द
डूबकर डूबा नहीं हरसूद
बाघ
कबूतर
उठो मेरे देश
बाघ और सुगुना मुंडा की बेटी
गाँव का सपेरा
आइना-द्रोह
हत्या श्रृंखला की...
अजानबाहु
उत्तर पटकथा बनाम
मंदिर लेन
कर्फ्यू खुला है
देह
मोर नाच
उजाले में
जनता का आदमी
1857 के डेढ़ सौ वर्ष में
लकड़हारे की अधूरी कविता
जिधर कुछ नहीं
अहल्या
रक्तचाप
बंधक देश
कालयात्री
फिलहाल साँप कविता
मुश्किल आसानियों का सफरनामा

विकल्प, तृशूर

ISSN : 2231-6191

जन विकल्प

अंक : 14-15 संयुक्तांक जनवरी-जून 2022, जुलाई-दिसंबर 2022

पीयर रिव्यूड पत्रिका

समकालीन लंबी कविताओं से एक यात्रा

संरक्षक
के.जी. प्रभाकरन

प्रबन्ध संपादक
वी.जी. गोपालकृष्णन

संपादक
पी. रवि

सह संपादक
के. एम. जयकृष्णन
पी. गीता

सलाहकार समिति
रवि भूषण (रांची)
विनोद शाही (जालंधर)
वि. कृष्णा (हैदराबाद)
देवेन्द्र चौबे (नई दिल्ली)
विनोद तिवारी (नई दिल्ली)

© लेखक
पहला संस्करण : 2020

ISBN : 978-81-945817-8-9

9 788194 581789

नमन प्रकाशन
4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
फोनः 23247003, 23254306

श्री नितिन गर्ग द्वारा नमन प्रकाशन के लिए प्रकाशित तथा
एशियन ऑफसेट प्रिंटर्स, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

Shri Lal Shukla : Srijnatmak Vyangyakar
***By* Dr. Neeraj kumar Divvedi**

अनुक्रम

	संपादकीय		५
१.	समकालीन कविताः अवधारणा और प्रस्थान	अच्युतानंद मिश्र	७
२.	केदारनाथ सिंह का माउंट एवरेस्ट	निशांत	१५
३.	मुक्तिबोध के बेहद मैदान में रघुवीर सहाय का खेल	व्योमेश शुक्ल	२८
४.	विक्षोभ और मोहभंग की तार्किक अभिव्यक्ति	राहुल शर्मा	३१
५.	मशीन, मानव और चन्द्रकान्त देवताले का त्रिभुवन	डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी	३६
६.	लोक और जन का चतुर चितेरा	डॉ. रश्मि कृष्णन	४३
७.	लोकशक्ति में अटल विश्वास	प्रो.रामप्रकाश	४९
८.	सजग करते रहने का दायित्व	चिन्चु रामचन्द्रन	५५
९.	विकास के आतंक के खिलाफ कविता का ...	डॉ. के.जी. प्रभाकरन	६२
१०.	देश और कविता	प्रेमशंकर सिंह	६८
११.	इंसानी सरोकार की कविता	डॉ. राधामणी सी	७५
१२.	श्रमिकों का संघर्ष जारी है	श्रुतिमोल के.एस.	८१
१३.	आईने से आती आवाज़ : 'तुम्हें देश दिखता है,...'	अवनीश यादव	८४
१४.	आसान जीवन के लगातार मुश्किल होते जाते...	राहुल शर्मा	९०
१५.	आदमी और घोड़ो के बारे में कविता	रघुवंश मणि	९६
१६.	एक गंवई किसान के शहरी मज़दूर में बदलने ...	प्रणीता पी.	१०२
१७.	अनंत कालयात्री कवि और कविता	डॉ. शोभना जोशी	११०
१८.	स्वायत्तता के लिए संघर्ष करती कविता	डॉ. अनुज लगुन	११७
१९.	कर्फ़्यू की दहशत और आम आदमी की ज़िंदगी	डॉ. आर. शशिधरन	१२४
२०.	परिप्रेक्ष्य को सही करने की बलवती स्पृहा	पी. रवि	१२८
२१.	प्रतिरोध का स्वप्न जाल	रामप्रसाद	१३९
२२.	संवेदनशील यथार्थ की कविता	डॉ. प्रिया ए.	१४४
२३.	दैहिक चिन्तन का अन्तरविषयात्मक अभियान	जयकृष्णन के.एम.	१५१
२४.	कविता में सभ्यता समीक्षा	गोपाल प्रधान	१५४
२५.	आजानुबाहु के पीछे	डॉ. के.के. वेलायुधन	१५९
२६.	शिकारियों से भरे समय में मुक्ति का प्रश्न	डॉ. पुनीतकुमार राय	१६७
२७.	संघर्षपूर्ण समय की कविता	श्रीलेखा के.एन.	१७१
२८.	सभ्यता की सद्गति में समय का संस्कृति विमर्श	डॉ. पद्मप्रिया	१७५
२९.	बेहतर एवं उदार गुलामी के खिलाफ संघर्ष	सिन्धु ए.	१८१
३०.	पुराण के बहाने स्त्री अस्मिता की तलाश	डॉ. के. अजिता	१८६

मशीन, मानव और चन्द्रकान्त देवताले का त्रिभुवन

डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी

७ नवबर, १९३६ को मध्य प्रदेश के बौतूल जिले में जन्मे चन्द्रकान्त देवताले अपनी कविता की सघन बुनावट और उसमें निहित राजनीतिक संवेदना के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने अपनी कविता की कच्ची सामग्री मनुष्य के सुख-दुःख, विशेषकर औरतों और बच्चों की दुनिया से इकट्ठी की थी। हिन्दी भाषा के यशस्वी कवि चन्द्रकान्त देवताले का १४ अगस्त २०१७ को नई दिल्ली में निधन हो गया। उस समय वे लगभग इक्यासी बरस के थे। अतः सहज रूप से कहा जा सकता है कि उन्होंने भरपूर सृजनात्मक जीवन जिया। उन्होंने अपनी सृजनात्मक दक्षता से हिन्दी कविता के अन्तर्मन को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया। कालजयी रचनायें इसलिए कालजयी होतीं हैं क्योंकि वे जीवन के प्राथमिक सच, प्यार और मृत्यु के बारे में बात करती हैं और यही बात हमें देवताले की कविताओं में भी दिखाई पड़ती है। ऐसे कवि का होना भारतीय साहित्य, विशेषकर हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय बात है।

बैतूल से देवतालेजी का अनन्य लगाव रहा है और बैतूल के दैनिक जीवन में हिन्दी और मराठी दानों भाषाएं प्रयुक्त होती हैं, इसलिए उनके साहित्य जगत में यह दोनों भाषाएं जीवित थीं। अपने प्रिय कवि मुक्तिबोध की तरह देवताले भी मराठी से आत्मीय भाषा की तरह बरताव करते थे। मराठी भाषा से अनुराग उन्हें मराठी कविता और मराठी कवि दिलीप चित्रे की कविताओं की ओर ले गया। दिलीप चित्रे की कविताओं का अनुवाद 'पिसाटी का बार्ज़' नाम से प्रकाशित है। देवताले काफी पढ़े लिखे इंसान थे। उन्होंने कवि गजानन माधव मुक्तिबोध पर पीएचडी की थी। आपने इंदौर के एक कॉलेज में अध्यापकीय दायित्व का निर्वहन भी किया। उन्हें ढेर सारे पुरस्कार मिले थे जिसमें अंतिम महत्वपूर्ण पुरस्कार २०१२ का साहित्य अकादेमी पुरस्कार था। यह उनके कविता संग्रह 'पत्थर फेंक रहा हूँ' के लिए दिया गया था। देवताले जी का रचना समय आज़ाद भारत का रचना समय है। उन्होंने हिन्दी कविता के पिछले छह दशकों को अपनी रचनाधर्मिता से आलोकित किया। उन्होंने दर्जन भर कविता-संग्रह और आलोचना की एक किताब लिखी।

सन् १९५२ में ही देवतालेजी ने पहली कविता लिखी थी। देवताले का पहला काव्य संग्रह भले ही १९७३ में प्रकाशित हुआ हो, किन्तु उसमें संगृहीत कविताओं से पता चलता है कि जनतांत्रिक शासन प्रणाली की स्थापना के बाद की और विशेषकर सन् १९६० के बाद की भारतीय समाज की समस्याओं का चित्रण उनमें हुआ है। अतः स्पष्ट है कि सन् १९६० से देवताले राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के सजग प्रहरी रहे हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में जीवन और जगत से जुड़ी समसामयिक प्रत्येक स्थिति परिस्थिति को अत्यंत यथार्थपूर्ण ढंग से चित्रित किया है। भरसक प्रयासों के बाद भी जब स्वराज्य को आदर्श रामराज्य में परिणत न किया जा सका तो जनमानस में मोहभंग की स्थिति पैदा हो गई। जीवन के इस कटु यथार्थ का सामना करने में उसे जिन दबावों-तनावों को

झेलना पड़ा है, जिन-जिन आरोहों अवरोहों, संकल्पों-विकल्पों से गुजरना पड़ा है, उसकी स्पष्ट छाप हमें देवताले के सम्पूर्ण काव्य में दिखाई देती है। आजादी के पिछ्ले पाँच दशकों में जो समाज बना है वह देवताले के सपने का समाज नहीं है। वह एक बर्बर समाज है, माफियाओं और तस्करों के वर्चस्व का समाज। अकविता आंदोलन के संस्कार लेकर काव्य-सृजन करने वाले देवताले जी समकालीन काव्यधारा के एक प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं।

'भूखण्ड तप रहा है' संग्रह कवि चन्द्रकान्त देवताले का १९८२ में प्रकाशित पाँचवा काव्य संग्रह है। यह भूखण्ड उन्हें विषमता से तपता हुआ दिखाई देता है। आग और खून के सनातनी सम्बन्धों पर आधारित यह दीर्घ कविता है। उससे उत्पन्न गहरी चिन्ता पर आठ खण्डों से निर्मित यह रचना रचनाकार का आत्मकथ्य भी प्रस्तुत करती है। संग्रह से पूर्व प्रकाशित कविताओं में कवि का आक्रोश व्यक्त हुआ है, लेकिन इसमें उनके आक्रोश का स्थान विडम्बना ने ले लिया है। इस कविता का नायक 'त्रिभुवन' पूरी रचना के केन्द्र में है, और इसके माध्यम से कवि आदिम सभ्यता से लेकर मनुष्य के कम्प्यूटर युग तक की लम्बी यात्रा को प्रस्तुत करते हैं। इस रचना में चरित्र नायक त्रिभुवन की दृष्टि और उसकी सोच अनगिन आँखों का प्रतीक बन जाती है जो रोशनी के इन्तजार में एक सपना संजोये है। गुफायें, चट्टान पर पशुओं के चेहरे पर लेटी हुई नर आकृतियाँ आदि आदिम युग का सटीक चित्र प्रस्तुत करती हैं। मनुष्य होने के लिये आकार ढूँढ़ते हुए पीढ़ियों का क्रमशः विकास द्रुतगामी जिन्दगी का लेखा जोखा कम्प्यूटर के सहारे करने में समर्थ हो गया है। किन्तु आदमी का दिमाग ही सर्वोपरि है जिसने पृथ्वी की धड़कनों को लोकगीतों का स्पर्श दिया। वह गूँगेपन की गुफा से शब्दों की चमक तक आया।

इतिहास में सभी अपने जीवित सन्दर्भ से जुड़ने के रचनात्मक संघर्ष में लगे रहे हैं। इस संघर्ष का सुखद परिणाम यह है कि उनकी रचना में देश और काल के बीच कोई फर्क नहीं दिखाई पड़ता। इसका सबसे सार्थक उदाहरण 'भूखंड तप रहा ह' कविता में देखा जा सकता है। अब तक की उनकी सबसे लम्बी कविता भी आधुनिक वैचारिक और मध्यवर्गीय व्यवस्था की आत्मसजगता से सम्पन्न एक ऐसी कविता है जिसे व्यक्ति और समाज की प्रथम चेतना से पढ़ना सम्भव नहीं होता है। यह कविता पूरे मन से समाज में जीने-मरने वाले एक ऐसे व्यक्ति की कविता है जो आधुनिक सभ्यता के प्रसार के इस अन्याय के दौर को महज इस सरल विचार की तरह नहीं जानता कि अन्याय हो रहा है और उसका प्रतिरोध जरूरी है। इस काव्य संग्रह को वे अपने जीवन से सम्बन्धित मानते हुए कहते हैं कि इसमें मेरे जीवन का बहुत कुछ है। यह आत्मकथा जैसी ही है। गांव, खेत, रिश्तेदार तमाम चीजें हैं इसमें। उनके आत्मकथा से अभिप्राय है उनके समय के अनुभव की कथा। भूखंड के माध्यम से मानवीय पीड़ा का वर्णन किया है। यह बताया है कि यह भूखंड कब तक तपता रहेगा। धरती पर अन्याय, अत्याचार कब तक चलता रहेगा, कब हमारी आबादी को इससे मुक्ति मिलेगी। इस तरह भूखंड के सपने से हमें अनेक वस्तुएं प्राप्त होती हैं।

आज के हालात में कवि की संवेदना के भयानक खतरे के खिलाफ देवतालेजी सावधान है। देवताले समर्पित कवि हैं। अतः हम कह सकते हैं कि कवि ने मानव के विकास की सारी वारदातों को मानवीय दृष्टि से समझते-परखते हुए हर क्षण आदमी को केन्द्र में रखा है, यानि हमें आदमी से दूर कहीं नहीं जाना है। कवि परिवेश के प्रति सजग है और अमानवीयता तथा नृशंस अत्याचारों के

विरुद्ध है। मानवीय यातना से भयावह अनुभवों के बीच उनकी कविता बाह्य स्वातंत्र्य और आन्तरिक स्वातंत्र्य की बात करती है। कवि के केन्द्रीय रचना संसार में हमारा वर्तमान समय और समाज की हलचलें आती हैं जिनसे हम जूझ रहे हैं। 'भूखंड तप रहा है' एक प्रलंबित लय वाली कविता है जिसका केन्द्रीय प्रतीक नायक त्रिभुवन में कवि स्वयं को देखता है। कविता के केन्द्र में होते हुए भी कविता इसके इर्द-गिर्द नहीं बल्कि वह अपने संवेदनात्मक तर्क से आगे बढ़ती है। यह कविता की विशेषता है जिसके चलते पूरी कविता अपने अनेक सन्दर्भों में सिर्फ एक व्यक्ति का आत्मकथ्य न होकर अपने पूरे समय का आत्मकथ्य होने का साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

'भूखंड तप रहा है' काव्य संग्रह में कुल मिलाकर आठ कविताएँ हैं। प्रत्येक कविता में समसामयिक विविध समस्याओं को वाणी दी है। 'चकमक पत्थर' नामक इस संग्रह की पहली कविता है जिसमें कवि ने विज्ञान द्वारा हुई एकांगी प्रगति पर दृष्टि डाली है। इस प्रगति का फायदा उठाकर अमीर लोग पंछियों की तरह अपने सपनों के आकाश में स्वच्छंद विहार कर रहे हैं। कालाबाजारी करने वाले और अनैतिक मार्ग से धन कमाने वाले जंगली सुअर की तरह धरती खोद कर संजीवनी अपने पास जमा कर रहे हैं। ऐसी विडम्बना में त्रिभुवन तथा उसके तबके के अन्य आम लोगों को दिन-रात कष्ट उठाने के बाद भी सूरज की रोशनी नसीब नहीं। अर्थात आम लोगों के जीवन में विज्ञान-जनित तथाकथित प्रगति के बाद भी अंधेरा ही है, उनकी अनगिनत आँखों को सूरज का अब भी इंतजार है।

आज युगीन हलचलें और भावी परिस्थितियाँ नियन्त्रणमुक्त अवस्था में हैं। त्रिभुवन के बिखरे हुए इरादे भूख से लड़ाई का समीकरण पेश कर परिवर्तन के लिए संगठित शोषित वर्ग का आवाहन करते हैं। 'चकमक पत्थर' कविता का चकमक पत्थर मानव के भीतर प्रसुप्त अग्नि का प्रतीक है। दरअसल यहाँ कविता इतिहास, भूगोल के झरोखे से मनुष्य की विकासशील ऊर्जा और दुर्दम जिजिविषा को उजागर करती है। व्यक्ति से जुड़े हुए तमाम सन्दर्भ यहाँ एक रूप हो गये हैं और त्रिभुवन की समझ तथा उसका मानसिक संघर्ष संवेदना और तर्क के स्तर पर मानवीय करुणा, असहायता तथा विडम्बना के बीच सर्जनात्मक ऊर्जा को पेश करता है। यह लम्बी कविता अपनी सौंधी जमीन से संलग्नता दर्शाने के साथ ही सामन्ती परिवेश का मुआयना करती है और आदिम मुठभेड़ों के महाभारत को उजागर करती है। सामन्ती वैभव इतिहास की अजीब सी गन्ध के बीच टंगी हुई मूँछदार तसवीरों, चाँदी की तश्तरियों और फड़फड़ाते चमगादड़ों की याद दिलाता है। आज की दुनिया में त्रिभुवन मुखौटों के बीच अन्याय, विद्रूपता और विसंगतियों का खुलासा करता हुआ विदेशी दबावों को खुलकर महसूस करता है। कवि जीवन और कर्म का अंतराल नापते हुए 'चमकदार कुर्सी के सपने' का चालाक गणित या क्रूर पूँजीवादी सभ्यता की साजिशों का निर्मम भण्डाफोड़ करता है। इस तरह हवा की तहों में छिपे हुए डंक सामने आने लगते हैं। हिंसा, धमकियों, धूप की तपन और दुर्भाग्यों के बीच पिसती हुई जनता को त्रिभुवन सरकार बनाते देखता है और यातनाओं के दायरे में सबको खड़ा करता है।

त्रिभुवन के माध्यम से समाज के आम व्यक्ति के जीवन की विडंबना को कवि ने मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है, लेकिन कविता केवल उसके चरित्र चित्रण में ही अटकी नहीं रही है। इस सन्दर्भ में केदारनाथ सिंह कहते हैं - "पर खास बात यह है कि कविता एक वर्तुल गति से उसके (त्रिभुवन के) इर्द-गिर्द नहीं घूमती, बल्कि वह अपने संवेदनात्मक तर्क से आगे बढ़ती है - कई बार

उसे हाशिए पर छोड़ती हुई। यही इस कविता की बनावट की विशेषता है जिसके चलते पूरी कविता अपने अनेक सन्दर्भों में सिर्फ एक व्यक्ति का आत्मकथ्य न होकर, अपने पूरे समय का आत्मकथ्य होने का साक्ष्य प्रस्तुत करती है।"[१]

त्रिभुवन विचार करता है कि क्या आग की खोज के पूर्व भी में इसी रूप में उपस्थित था? आज के डिजिटल युग में माँ को आटा पीसते देख त्रिभुवन को हंसी आती है। यही इस युग की विडम्बाा है कि कुछ लोग कष्ट किए बिना भी ऐशोआराम में रह रहे हैं और कुछ दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। कम्प्यूटर के इस युग में मानव संवेदनहीन हो रहा है। और वह अपने द्वारा अविष्कृत कम्प्यूटर में मस्तिष्क के विकास हेतु प्रयासरत है, हो सकता है कि निकट भविष्य में वह ऐसा कर भी ले परन्तु हृदय में स्थित संवेदनाओं का विकास वह किस प्रकार करेगा। उसी प्रकार की स्थिति वर्तमान युग में जीवन जीने वाले लोगों की भी हुई है। इस स्थिति पर व्यंग्य करते हुए कवि ने लिखा है - "अब तो मस्तिष्क है कम्प्यूटर के पास भी/ कविता लिख देगा कम्प्यूटर एक दिन/ पर क्या बसंत/ या चिड़िया/ अथवा स्तनों से झरता झरना/ सम्भव है कभी कम्प्यूटर के गर्भ से भी"[२] कम्प्यूटर न तो भूख की तासीर महसूस कर सकता है और न ही स्याह पड़ चुकी चमड़ी पर उभरे चाबुक के निशानों का जवाब दे सकता है। यही वजह है कि आज की कम्प्यूटर-पीढ़ी अपने आसपास के भूखे-प्यासे लोगों को न तो देख पाती और न ही उसके प्रति उनके मन में कोई लगाव होता है - "आज भी मकई के खेतों के आसपास/ फटी हुई आँखों की गुफाएँ/ एक-दो की गिनती से गिन लो हड्डियाँ कितनी ही/ या फिर दो के पहाड़े से"[३] कवि के मन में प्रश्न है कि कहाँ चकमक पत्थर से आग का अविष्कार करके हर व्यक्ति तक पहुँचाने वाला आदिम मानव और कहाँ जेटयान और कम्प्यूटर का इस्तेमाल करके दूसरों को लूटकर स्वयं हवा में उड़ने वाला आधुनिक मानव। ऐसी स्थिति में कवि को समसामयिक समय बेहद कातिल लगता है। फिर भी उन्हें इस बात की उम्मीद है कि भूख की लड़ाई लड़ने वाले लोग एक दिन इसका सामूहिक विरोध जरूर करेंगे।

मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ संवेदनशीलता मानव का सहज गुण रहा है। एक दूसरे को समझना तथा सुख-दुख में शामिल होना स्वस्थ समाज का लक्षण है। लेकिन आधुनिक यांत्रिक युग में मानवीय सम्बन्ध भी यान्त्रिक बन गए हैं। आधुनिक कम्प्यूटर युग में तो मानव का हर काम कम्प्यूटर कर रहा है। परिणामतः जीवित मानव से अधिक आज कम्प्यूटर को महत्व मिल रहा है। लेकिन मानव के अन्दर होने वाली भाव-भंगिमाएँ एवं संवेदनाएँ कम्प्यूटर या यन्त्र के अन्दर कभी-भी उत्पन्न नहीं हो सकती। आधुनिक यंत्रवत मानव इसे समझ ही नहीं रहा है। चौबीसों घंटे कंप्यूटर के साथ रहने वाले तथा उसे ही सर्वस्व समझने वाले आधुनिक मानव की आत्मा मर चुकी है। फिर ऐसे संवेदनाहीन मानव को क्या कंप्यूटर किसी के भूख की पीड़ा या आत्याचार की वेदना से अवगत कर सकता है? इस संदर्भ कवि ने लिखा है - "कंप्यूटर के मस्तिष्क में नहीं है/ भूख की पीड़ा/ उसकी जुबान पर कहाँ/ काली चमड़ी पर उनचने वाले/ चाबुक का कोई जवाब हवा की तहों में छिपे हैं इतने डंक/ अगर सोचे आकाश तो ऐंठने लग जाए"[४]

औद्योगिक प्रगति तथा नए-नए वैज्ञानिक अविष्कारों से दुनिया भर के मानव का जीवन सुखकर हुआ है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी अन्वेषण से यातायात सहज और गतिमान हुई है, हवा और पानी से भी यात्रा सहज सम्भव हुई है। मानव की क्षमता के परे होने वाले अनेक कठिन और असम्भव

कार्य यन्त्रों से सहज सम्भव हुए हैं। अन्तरिक्ष तथा समुंदर की अतल गहराइयों में छिपे अज्ञात तथ्यों की खोज भी मानव के लिए सहज सम्भव हुई है। संकर बीज निर्मिति से अनाज तथा फलों के उत्पादन में जबरदस्त क्रान्ति हुई है, कीट नाशक औषधों से किसान निश्चिंत हुए हैं। मानव की अनेक बीमारियों पर दवाएँ उपलब्ध हैं, बीमारी न हो इसलिए बीमारीरोधक टीके लगाए जा रहे हैं। लेकिन औद्योगिक प्रगति के इतने सारे फायदों के बवजूद भी कारखानों से निकलने वाला धुंआ, कैमिकल तथा अन्य फैक्टरियों से नदी तथा सागर में छोड़ा जाने वाला गन्दा पानी, ग्रीन हाऊस गैस, फसलों के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले कीटनाशक (जहर), यान्त्रिक वाहनों में प्रयुक्त किया जानेवाला मिट्टी का तेल तथा कारखानें में निर्मित कचरा प्रदूषण की भयंकर समस्या निर्माण कर चुका है। दुनिया भर के सभी देश इस समस्या से जूझ रहे हैं। अमीर लोग इस समस्या से बचने के अनेक उपाय ढूँढ़ते हैं तथा पैसों के बल पर उससे बच निकलते हैं। लेकिन मजदूर तथा गरीब इस समस्या से बच नहीं पाते और अनेक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। देवताले जी ने इन समस्याओं से जूझते हुए मजदूरों का चित्रण इस तरह किया है - "आज भी चिमनियों से/ पंख फैलाकर उड़ता है धुएं का पहाड़/ त्रिभुवन नहीं था वहाँ/ मशीनों को अपना खून दे/ लौटते हुए पीले-जर्द-लस्त चेहरे/ जो एक अंधेरे से जा रहे हैं/ दूसरे अपने अंधेरे में/ जबकि नियाँन लाईट की भभकों में/ लगातार चमकती और बुझती है समृद्धि और सभ्यता/ पर किनके लिए" [५]

इस संग्रह की दूसरी कविता 'साँप सीढ़ी का खेल' में कवि ने इतिहास से लेकर वर्तमान तक त्रिभुवन को किन हालातों से गुजरना पड़ा है, इसका चित्रण किया है। कवि अंग्रेजों के आगमन के पहले का समय फूलों की महक और बिच्छुओं के छिपे डंकों के पवित्र अंधेरे के समान लगता है। अंग्रेजों ने इस देश का नक्शा ही चबाना आरंभ किया था। उन्होंने यहाँ की हर कीमती चीज को अपने देश भेज दिया और यहाँ के लोगों का महामारी तथा अन्य संकटों से जूझना अनदेखा किया। अंग्रेजों ने जाते वक्त धार्मिक झगड़े सुलगाये, सुलगाने वाले यहाँ के ही थे। सुलगाने के बाद स्वयं ही रहनुमा बनने का नाटक करते थे - "उस धागे को किसने तोड़ दिया/ और बारूद में डुबोकर/ किसने सुलगा दिया तीज-त्यौहारों के बीच/ जिन्होंने सुलगाया वे ही दौड़ रहे थे/ रहनुमा बनकर कुओं की तरफ/ और उनके भीतर का चालाक गणित/ एक नई चमकदार कुर्सी का सपना देखते हुए/ बड़ी तिजोरी का नाप दे रहा था।" [६]

अपनी चालबाजी से सत्ता हथियाने के बाद इन्होंने अपना जालिम चेहरा भिखमंगे या परोपकारी चेहरे के पीछे छिपाया। उसी चेहरे से वे हत्यारे का भी काम निकाल लेते हैं। उन्होंने हवा में आरी छिपाई है और तेजाब के बादल बिछाये हैं। समय भी उनका ही साथ देता है, क्योंकि दगाबाज घड़ी उनके पास है। उनके कारनामों से फैला आम व्यक्ति के जीवन का सूखा हटना अब मुश्किल है क्योंकि आम व्यक्ति को इस षड्यंत्र का पता ही नहीं है।

इस संग्रह की तीसरी कविता 'चख कर देखो शब्द' में बुद्ध के जमाने से चली आ रही जमींदारों की चालाकी और न्याय व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य है। साथ ही सरकार का अंधापन तथा भ्रष्ट व्यवहार भी व्यंग्य से नहीं छूटा। सरकार गरीबों की ताकत पर खड़ी है, लेकिन उनके विरोध में कार्य कर रही है। देवताले की अन्य कविताओं की तरह इस कविता में भी औरत का चित्रण है। कवि उसे हँसी और गुलाब का रूप, चंद्रमा और संगीत का सत, समुद्र का नमक कहते हैं। लेकिन उन्हें उसको

समसामयिक बेबस स्थिति में देखकर दुख होता है। कोई अपना जिस्म बेचने के लिए मजबूर है, कोई अपने बच्चे समेत कुएँ में कूद रही है, कोई केवल पांच रूपये के लिए अपनी बेटी को बेच रही है, तो कोई अधनंगी बूढी औरत मौत की भीख माँग रही है। कविता के अंत में मिलजुलकर हिम्मत के साथ इसका विरोध करने का संदेश दिया है।

इस संग्रह की 'जहर की गाँठ कहाँ है' नामक चौथी कविता में कवि ने सामाजिक विषमता की कडुवाहट पर प्रकाश डाला है। विषमता के जहर का अनुभव करके त्रिभुवन की आँखें लाल हो जाती हैं और उसी समय उसकी दृष्टि पत्नी की तरफ चली जाती है, जो कोहरे के पार उजले दिनों का इंतजार कर रही है। 'इस शाही हाड़ तोड़ती दिनचर्या में' नामक पांचवीं कविता में त्रिभुवन को अपनी बेटी द्वारा किए इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ते हुए परेशान दिखाया है कि दिन के उजाले में मनुष्यों को और किसकी प्रतीक्षा है? कवि का उस उजाले की ओर संकेत है कि जहाँ मजदूरों, किसानों और स्त्रियों को परंपरागत हाड़ तोड़ती दिनचर्या से मुक्ति मिले।

'गुप्त दरवाजा और अदालत की सीढ़ी' नामक छठी कविता में गरीबों के साथ अन्याय करने वाली व्यवस्था का चित्रण किया है। साथ ही बिक चुकी न्याय व्यवस्था की भी पोल खोली है। कवि उसे सत्य का बहुरूपिया कहते हैं। 'चोंच से पेड़ उगाती चिड़िया' नामक सातवीं कविता में सरकारी कार्यालयों की निष्क्रियता और रिश्वतखोरी पर व्यंग्य करने के साथ न्याय के गायब होने पर तथा पेशकार की धमकी पर चिंता जताई है। 'मई की विशाल छती पर अग्नि वृक्ष उड़ते हैं' शीर्षित आठवीं और अंतिम कविता में कवि ने परिवर्तन का संकेत दिया है। असंख्य चिड़ियां एक साथ हरकत करती हैं, तो अजगर भी डरता है। कवि संदेश देते हैं कि - "दुष्प्राप्य नहीं होते हैं उत्तर कभी भी/ इतिहास की कुबड़ अकारथ नहीं जाती" ७

जिस तरह मानव सामाजिक विषमता में पिसा जा रहा है, उसी तरह अदालत के दरवाजे से उसे अपने न्याय के लिये बार-बार टकराना पड़ता है। कवि देवताले को न्याय में विषमता दिखाई देती है। न्याय की विषमता का चित्रण 'गुप्त दरवाजा', 'अदालत की सीढ़ी' शीर्षक कविताओं में हुआ है। कवि की मानवतावादी दृष्टि सदाशयता के साथ उन जड़ों तक पहुँचना चाहती है जहाँ से आदमी को काटा जा रहा है। त्रिभुवन पाशविक भगदड़ और बदहवाश खामोश सिसकियों के साथ अस्पताल और अदालत की स्थितियों के बारे में भी सोचता है। कवि का प्रश्न है सूखे ठूँठ पर कैसे फूटेंगी शाखें, खिलेंगे पत्ते? कारण यह है कि भूखण्ड तप रहा है। धोखा देने वाली आँकड़ों की किताबें और हत्यारों का बेदाग हँसना बहुरूपियों की सारी कहानी कह देता है। इस दीर्घ कविता में भ्रष्ट व्यवस्था, शिक्षा जगत और आलसी जीवन पद्धति के साथ जन्म कुंडलियों, यज्ञों, टोटकों, ताबीजों को भी स्पष्ट सामने लाया गया है क्योंकि 'बसंत खौफनाक हो गया है'। आग के दरवाजे को पार कर ही त्रिभुवन भविष्य की संभावनाओं पर विचार करने की निर्णयात्मक स्थिति पर पहुंचता है। कविता साफ-साफ दर्शाती है कि 'निमन्त्रण देने से नहीं आयेगी रोटी' अतः विद्रोही चेतना ही हड्डियों को बजाकर प्रगतिशीलता का इजहार कर सकती है। कवि ने पुरखों के जीवन से बच्चों का तालमेल प्रस्तुत किया है। स्त्री के बारे में कवि का स्वस्थ चिन्तन स्तुत्य है। पृथ्वी और प्रकृति के प्रति इतना लगाव, जुड़ाव कविता को सार्थकता प्रदान करता है - "हजारों तरीकों से प्यार किया है हमने/पृथ्वी से/ और/ स्त्री से/ दानों के भीतर है ब्रह्मण्ड की खुशियों के झरने/ दौड़कर छूलेने वाली आँखों से देखो/ सब देखो/ नीली गौरेया/

नदी को देख रही है/ तिरछी नजर से।"[८]

देवतालेजी की कविताओं में युगबोध की पूर्ण क्षमता है। उनकी कविताएँ युगीन सच्चाइयों का यथार्थ निरूपण करते हुए कभी अन्याय सहकर भी गहरी नींद सोए समाज को देख निराशा का स्वर भरती हैं, तो कभी आस्थावादी दृष्टि को विकसित करने का प्रयास करती हैं। समसामयिक प्रदूषण, आतंकवाद, बाजारवाद, मानवीय मूल्यों का ह्रास, भ्रष्टाचार, शोषण, वर्गीय और आर्थिक विषमता, भ्रष्ट न्याय व्यवस्था, सांप्रदायिकता, अखबारों का गिरा हुआ स्तर तथा अन्य समस्याओं को रेखांकित करने के साथ ही पिछले पचास वर्षों भारतीय राजनीतिक इतिहास की विराट विडम्बना को पूर्ण क्षमता के साथ प्रस्तुत करती हैं। भारतीय समाज के सर्वहारा वर्ग और नारी के प्रति मानवीय दृष्टि से देखने का संकेत करने वाले देवताले बेकारी जैसी युगीन विकराल समस्या के प्रति पूर्ण सचेत नहीं दिखाई देते। मानवीय मूल्यों के स्वस्थ विकास और सार्थक जीवन दृष्टि की कामना करने वाली उनकी कविता युगीन उपलबिधयों के प्रति भी चुप है।

कवि आग और मानव की स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ हैं, वे समाज को अच्छी तरह से जानते हैं। त्रिभुवन की अनुभूति कवि चन्द्रकान्त देवताले की अनुभूति है। वर्तमान समाज का भयानक रूप 'भूखण्ड तप रहा है' संग्रह को कविताओं में दिखाई देता है। सरकार और राजनीति एवं निम्न तथा मध्यवर्गीय समाज की दयनीय अवस्था इस भूखण्ड पर मानों सूरज की धूप से भी अधिक तप रही है और इस तपिश में आज का मनुष्य चारों ओर से जकड़ा हुआ उस तपिश में भुना जा रहा है। अपनी खोखली जिन्दगी वह जी रहा है। संक्षेप में 'भूखंड तप रहा है' में युगों से अन्याय सहते गरीबों, दलितों, मजदूरों, किसानों और स्त्रियों की पीड़ा का ताप चरमसीमा पर बताया है और इस पीड़ा से मुक्ति के लिए सामूहिक जागरण का संकेत दिया है।

सन्दर्भ -

१. केदारनाथ सिंह, *भूखंड तप रहा ह*, पुस्तक के कवर पर

२. *भूखंड तप रहा है*, पृ. १४-१५

३. वही पृ. १६-१७

४. वही पृ. १७

५. वही पृ. १८

६. वही पृ. २९

७. वही पृ. ८७

८. वही पृ. ८३